

# संस्कार परिवर्तन द्वारा महिला सशक्तिकरण

डा. सविता बहन, शान्तिवन, आबू रोड़ ( राज.)

नारी को स्वभाव से कोमल, अबला, भीरू, पराश्रित माना गया है पर वास्तव में ये संस्कार उसे कलियुग समाज द्वारा प्रदत्त हैं। निरन्तर इसी स्थिति में रहने के कारण उसने इसी स्वरूप को स्वीकार कर लिया है। उदाहरण स्वरूप रोम में कैदियों को एक ऐसे बन्द कमरे में रखा जाता था जहाँ रोशनी भी नहीं पहुँचती थी जब उन्हें रिहा किया जाता तो वे पागल की तरह दौड़ते थे और कहते थे, हम अन्धेरे में ही रहना चाहते हैं, ताकि हमारी आँखों की रोशनी बनी रह सके। यही स्थिति नारी के साथ हुई।

इतिहास पर नजर डालने पर हम पाते हैं कि आदि काल में नारी की स्थिति काफी उच्च, श्रेष्ठ थी। वह देवी थी, शक्ति थी, पूज्या थी, पुरुष से भी अधिक सम्मान उसे प्राप्त था। राधे कृष्ण, सीता-राम इसी परम्परा के स्वरूप हैं। परन्तु आत्मिक स्थिति का युग था।

मध्यकाल में नारी को कोमलांगी अथवा अबला नहीं लेकिन शक्ति प्राप्त करने के लिये दुर्गा, काली, अम्बा कह पूजा करते हैं, जो नारी का ही आध्यात्मिक रूप से सशक्त स्वरूप है लेकिन धीरे-धीरे नारी के इस स्वरूप में परिवर्तन होने लगा। देव संस्कृति धीरे-धीरे हिन्दू संस्कृति का रूप लेने लगी। नारी की शारीरिक संरचना कोमल होने के कारण उसका समाज में स्थान बदलने लगा। वह नारी जो पूज्य थी अब असुरक्षा एवं अनिश्चितता की भावनायें उसमें उत्पन्न होने लगी। वह आत्मनिर्भर के बजाए, पराधीन स्थिति में चली गई। कई धर्म पण्डितों ने उसे नारी नर्क का द्वार या ताड़न की अधिकारी घोषित कर दिया। जिससे वह अपने आत्म सम्मान को खोने लगी। धीरे-धीरे लड़की को परिवार के लिये बोझ समझा जाने लगा। उसे अशिक्षित रखकर, भेदभाव पूर्ण व्यवहार कर प्रताड़ित किया जाने लगा। मुस्लिम शासन के दौरान प्रारम्भ हुई पर्दा प्रथा ने उसे घर की चार दीवारी में कैद कर दिया। परिवारों में दिन रात काम में जुटी रहने वाली दासी के अलावा उसे कोई सम्मान नहीं प्राप्त था। इस प्रकार सती प्रथा से पुरुष के अहम् में और वृद्धि हुई। कुछ समाज सुधारकों ने स्त्रियों की दशा में सुधार लाने का प्रयत्न किया परन्तु कुछ कुरीतियों को दूर करने के अलावा वे उसे कोई विशेष स्थान नहीं दिला सके। नारी ने भी अपने इस कटु सत्य को स्वीकार कर लिया। इन्हीं परिस्थितियों में सन् 1937 में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना हुई। परमपिता शिव परमात्मा जो सबके परम रक्षक व उद्धारकर्ता, दुःखहर्ता है उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से नारी को अपनी मौलिक शक्तियाँ पहचानने का आह्वान किया। उसे पुनः स्मृति दिलाई तुम अबला नहीं शक्ति हो, देवी हो उठो। अब अपने स्वरूप को पहचानो। तुम्हें स्वयं के साथ-साथ मानव जाति का भी कल्याण करना है। इससे उसका मनोबल बढ़ने लगा और उसमें शक्ति स्वरूप के संस्कार जागृत होने लगे। फलस्वरूप विश्व में भी नारी शक्ति को पहचान मिलने लगी। नारी शिक्षा को महत्व मिलने से वह अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हो गई। विश्व में नारी पुनः उच्च स्थान प्राप्त करने की ओर अग्रसर है परन्तु आज भी विश्व के कई देशों में वह शोषित है। अतः आवश्यकता है आज परमपिता शिव का यह आध्यात्मिक उद्घोष प्रत्येक नारी तक पहुँचाने का ताकि वह अपनी सुषुप्त शक्तियों को जागृत कर सके। शिव शक्ति बनकर दिव्य गुणों का श्रृंगार कर पुनः नारी से श्रीलक्ष्मी जैसा पद पा सके। ऐसा तभी संभव है जब वह अपना श्रेष्ठ स्वमान जागृत करेगी। अपने स्त्री स्वरूप में ही नहीं, आत्मिक स्वरूप में भी स्थित होगी क्योंकि आत्मा न मेल है न फिमेल। उसमें दोनों ही संस्कार समाहित हैं। अतः जैसी स्मृति वैसी स्थिति के आधार पर सहज ही दैवी संस्कार उसमें प्रगट होने लगेंगे। फिर पुरुष स्वतः ही उसे बराबरी का तो क्या अपने से भी उच्च स्थान देंगे जैसा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने सिद्ध कर दिखाया है।